

विचार बिन्दु

स्वयं को भेड़ बना लोगे तो भेड़िये आकर तुम्हे खा जायेंगे। –जर्मन कहावत

धनखड़ के साथ यह व्यवहार शोभनीय नहीं

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ के द्वारा 21 जुलाई को त्यागपत्र देने के बाद न तो उनके बारे में कोई समाचार प्रकाशित हुआ है न ही किसी को यह पता है कि इस समय वह कहाँ पर है? सामान्यतः देश के उपराष्ट्रपति जैसे देश के द्वितीय सर्वोच्च सम्मानित पद पर रहे व्यक्ति की विदाई के समय एक औपचारिक विदाई समारोह तो होना ही चाहिए था। वैसे भी उपराष्ट्रपति, सत्ताधारी दल की पसंद से ही बनाए जाते हैं। जगदीप धनखड़ का त्यागपत्र जिन परिस्थितियों में हुआ वह अभी भी रहस्य के घेरे में है।

धनखड़ द्वारा पद छोड़ने के बाद जो घटनाक्रम हुआ है वह भी कम रहस्यमय नहीं है। इस घटनाक्रम ने कई प्रश्नों और आशंकाओं को जन्म दिया है। इनमें से कुछ का उल्लेख हम इस आलेख में करेंगे।

धनखड़ ने पद मुक्त होने के बाद अभी तक कोई सार्वजनिक बयान नहीं दिया है। उन्होंने किसी भी नेशनल या सोशल मीडिया पर कोई साक्षात्कार भी नहीं दिया है। वे किसी सार्वजनिक या पारिवारिक समारोह में भी नहीं देखे गए हैं। सामान्यतया धनखड़ हर विवादास्पद विषय पर मीडिया में बयान देने के आदी रहे हैं। उपराष्ट्रपति जैसे महत्वपूर्ण पद से निवृत्त हुए व्यक्ति का अचानक इस तरह सार्वजनिक परिदृश्य से लुप्त हो जाना समझ से बाहर है। पहले, यह समाचार आए थे कि उन्हें उपराष्ट्रपति का आवास छोड़ने के लिए कह दिया गया है। बाद में, सरकार ने इस बात का खंडन किया कि उन्हें ऐसा नहीं कहा गया है। किंतु, यह प्रश्न तो अभी भी बना हुआ है कि क्या वे अब भी उपराष्ट्रपति आवास में निवास कर रहे हैं अथवा उसे छोड़कर कहीं और चले गए हैं? देश को यह जानने का तो हक है ही कि,उनके पुराने उपराष्ट्रपति वर्तमान में किस हालत में हैं और कहाँ पर हैं? क्या वे स्वस्थ हैं? क्या उनका इलाज चल रहा है? यदि हां, तो किस अस्पताल में?

धनखड़ अपनी बात को व्यक्त करने में बहुत मुश्किल और उलझुका रहे हैं। राज्यसभा के सभापति के तौर पर भी उन्होंने कई बार लंबे-लंबे भाषण दिए जो असामान्य था। जो व्यक्ति अपने विचार व्यक्त करने के लिए इतना उत्सुक रहता हो, वह अचानक इतना खामोश हो जाए, यह बात गले उतरना बहुत कठिन है। धनखड़ के परिवार के किसी सदस्य का भी कोई वक्तव्य नहीं आया है। किसी ने न कोई टीवी इंटरव्यू दिया एवं न सोशल मीडिया का उपयोग इस उद्देश्य से किया। यह जिम्मेदारी केंद्र सरकार की बनती है कि वह धनखड़ के स्वास्थ्य के बारे में कोई बुलेटिन जारी करे क्योंकि उन्होंने इस्तीफा देने का कारण ही अपना खराब स्वास्थ्य बताया था।

क्या वे अस्पताल में भर्ती हैं? क्या वे अपने घर में नजर बंद हैं? क्या वे किसी दूसरे घर में रहने चले गए हैं? चले गए हैं? किस शहर में? इन सब प्रश्नों का स्पष्ट उत्तर न मिलने के कारण अफवाहों का बाजार गर्म हो रहा है।

इसी दौरान, पूर्व राज्यपाल सतपाल मलिक की मृत्यु होने पर उनका बिना राजकीय सम्मान के अंतिम संस्कार कर देने से विभिन्न आशंकाओं को और बल मिला। जो व्यक्ति चार राज्यों का राज्यपाल रहा हो उसके साथ इस प्रकार का उपेक्षा पूर्ण व्यवहार कोई स्वीकार्य नहीं था। सरकार का कोई प्रतिनिधि भी उनके अंतिम संस्कार में शामिल नहीं हुआ। यह उल्लेखनीय है कि सतपाल मलिक भी धनखड़ की तरह जाट नेता थे। सतपाल मलिक ने जम्मू कश्मीर का राज्यपाल पद छोड़ने के बाद कई प्रकार के ऐसे प्रश्न सार्वजनिक रूप से उठाए थे जिनसे प्रधानमंत्री और गृह मंत्री की नीयत पर शक पैदा किया गया।व्याभाविक रूप से यही कारण रहा होगा कि प्रधानमंत्री और गृह मंत्री की नाराजगी के कारण सतपाल मलिक को राजकीय सम्मान के साथ औपचारिक रूप से अंतिम विदाई तक नहीं दी गई।

सतपाल मलिक का एक वीडियो हाल ही में जारी हुआ है जिसमें उन्होंने अपनी बात को स्पष्ट करते हुए कहा है कि उनके पास केवल तीन-चार जोड़ी कपड़े हैं और उनके पास कोई संपत्ति नहीं है, फिर भी उनके विरुद्ध सरकार द्वारा जाए एजेंसी के माध्यम से कार्रवाई की गई और उन्हें परेशान किया गया। अस्पताल से जारी किए गए इस वीडियो में सतपाल मलिक अत्यंत ही कमजोर दिखाई दे रहे थे। क्या राजनीतिक जीवन में शुचिता इतनी सम्पात हो गई है कि यदि किसी व्यक्ति को विचारधारा हमसे अलग हो या अलग हो जाए तो उस व्यक्ति के साथ इस प्रकार का उपेक्षापूर्ण और अमानजनक व्यवहार किया जाएगा?

कोई भी निष्पक्ष व्यक्ति, धनखड़ के राज्यसभा के सभापति के रूप में किए गए पक्षपात पूर्ण व्यवहार का समर्थन नहीं कर सकता, किंतु भारतीय संस्कृति में तो विरोधियों के साथ भी शिष्टाचार पूर्ण व्यवहार तो किया ही जाता है। गत 20 दिनों में न केवल धनखड़ की उपेक्षा की जा रही है बल्कि उन्हें 'सार्वजनिक दृष्टि से लगभग दूर ही कर दिया गया है'। धनखड़ स्वयं स्वेच्छा से मीडिया से दूरी बनाए हुए है या उन्हें ऐसा करने के लिए बाध्य किया जा रहा है, इस बारे में केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है।

धनखड़ के साथ इस प्रकार का व्यवहार और भी आश्चर्यजनक इसलिए लगता है कि इन्हीं धनखड़ को भाजपा सरकार ने अचानक पश्चिम बंगाल का राज्यपाल और बाद में उपराष्ट्रपति के पद पर नियुक्त किया था।

पूर्व उपराष्ट्रपति के रूप में धनखड़ सभी उक्तष्ट श्रेणी की चिकित्सा प्राप्त करने के अधिकारी हैं। एक सामान्य राजकीय अधिकारी/कर्मचारी भी सेवा निवृत्ति के बाद राजकीय व्यय पर चिकित्सा सेवा प्राप्त करने का अधिकारी होता है। जो व्यक्ति राज्यपाल और उपराष्ट्रपति रहा है, उसको श्रेष्ठ इलाज सुलभ कराने की जिम्मेदारी पूरी तरह केंद्र सरकार की है। अभी देशवासियों के लिए यह समझना कठिन है कि केंद्र सरकार अपनी इस जिम्मेदारी

सतपाल मलिक का अंतिम संस्कार राजकीय सम्मान से नहीं करने पर एवं सरकार द्वारा किए जा रहे हैं व्यवहार की आलोचना भाजपा नेता कृष्ण कुमार जानू ने की, तो उन्हें पार्टी से निकाल दिया गया। ऐसी हालत में कौन धनखड़ से मिलने का प्रयास करेगा या उनके साथ किए जा रहे व्यवहार के बारे में सवाल करने का साहस करेगा?

का निर्वहन क्यों नहीं कर रही है ? विभिन्न किसान नेता इस बारे में बयान भी दे रहे हैं कि धनखड़ को किसान नेता होने के नाते, किसानों की समस्याओं पर केंद्र द्वारा समुचित कार्यवाही नहीं करने पर उसकी आलोचना करने के कारण सरकार द्वारा प्रताड़ना का भागीदार बनाया गया है।

सरकार के उपेक्षा पूर्ण व्यवहार को तो सरकार की नाराजगी माना जा सकता है, चाहे वह कितना ही अनुचित क्यों ना हो, किंतु जगदीप धनखड़ एवं उनके परिवार की चुप्पी वास्तव में आश्चर्यजनक है। उनके ऊपर ऐसा क्या दबाव है कि वह पद छोड़ने के बाद अब भी न तो पद छोड़ने का कारण बता पा रहे हैं न अपनी कोई प्रतिक्रिया या सरकार की बेरुखी पर व्यक्त कर रहे हैं। कहीं सरकार के पास धनखड़ की कोई कमजोर नब्ब तो नहीं है जिसे दबाकर सरकार उन्हें बोलने से रोक रही है?

सतपाल मलिक ने यदि कोई गलती की तो यही कि पद छोड़ते ही उन्होंने प्रधानमंत्री और गृह मंत्री के विरुद्ध बयान देने प्रारंभ कर दिए और कई सार्वजनिक समारों में खुलकर अपनी बात कही। उन्होंने सोशल मीडिया में कई इंटरव्यू भी दिए और उसमें भी सरकार पर किसान विरोधी होने का खुला आरोप लगाया। उन्होंने जम्मू कश्मीर के राज्यपाल के रूप में 300 कठों की रिश्तत देने की पेशकश का आरोप भी कुछ भाजपा नेताओं पर लगाया। इस शिकायत को जांच करने के स्थान पर सरकार ने मलिक के विरुद्ध सत्र केंद्रीय जांच एजेंसियों को लगा दिया।

संभवतया सतपाल मलिक के साथ सरकार द्वारा किए गएउपमानजनक व्यवहार को देखते हुए ही जगदीप धनखड़ ने चुप रहने में ही अपनी भलाई समझी। यदि वे खुलकर अपनी बात कहते और सरकार के प्रकोप की परवाह नहीं करते तो वे बड़े किसान नेता के रूप में सम्मान प्राप्त कर सकते थे। लगता है उनके मन में सरकार द्वारा प्रताड़ित किए जाा का भय कुछ अधिक ही बैठ गया था। सरकार के पक्ष में कार्यवाही करने और प्रधानमंत्री के समक्ष नतमस्तक होने के कारण उनकी सार्वजनिक छवि जितनी खराब हुई थी, अपनी बात खुल कर सामने रखने पर उनकी छवि में कुछ सुधार संभव था। यह भी संभव है कि किसानों की बात खुलकर करने पर वे किसान नेता के रूप में अधिक प्रतिष्ठापित हो पाते। दुर्भाग्यवश, अब तक उन्होंने यह रास्ता नहीं अपनाया है। शायद उन्हें ऐसा लगा हो कि प्रधानमंत्री और गृहमंत्री के विरुद्ध कही गई किसी भी बात को सहन नहीं किया जाएगा और उनकी प्रताड़ित करने की कार्यवाही बदले की भावना से की जाएगी।

धनखड़ के इस्तीफे को 20 दिन हो गए हैं और अब तक सरकार और स्वयं उनके द्वारा एक शब्द भी नहीं कहा गया है। किसी बड़े नेता का अचानक सार्वजनिक जीवन से गायब हो जाना, सैन्य शासकों के राज्य में या अफ्रीकी देशों में तो होता आया है किंतु भारत जैसे लोकतंत्र में इस प्रकार की घटना पहले ही है। सरकार को यह बताना चाहिए कि कोई भी नागरिक उनसे जाकर मिल सकता है। सरकार को किस बात का डर है, यह पता नहीं। यह आवश्यक है कि सरकार धनखड़ के स्वास्थ्य के बारे में एक बुलेटिन जारी करे ताकि अफवाहों पर विराम लग सके।

इस पूरे प्रकरण में मीडिया और विपक्ष की भी भूमिका अब तक बहुत अच्छी नहीं रही है।मीडिया में न तो इस विषय पर कोई सार्वजनिक चर्चा आयोजित की गई, न ही सरकार से प्रश्न पूछे गए। यह जानने का भी प्रयास नहीं किया गया कि पूर्व उपराष्ट्रपति इस समय कहाँ और किस हालत में हैं ? विपक्ष ने अवश्य इस बारे में बात उठाई है किंतु वह भी उतने जोर शोर से नहीं उठा पाया है जितनी आवश्यकता थी। सोशल मीडिया के माध्यम से प्रमुख विधि वेता और सांसद कपिल मिश्रल द्वारा धनखड़ प्रकरण के बारे में सरकार से कई सवाल किए गए हैं और अनेक आशंकाएं भी व्यक्त की हैं। उन्होंने तो सत्यता जानने के लिए एक आई आर तक दर्ज कराने की बात कही है। सतपाल मलिक का अंतिम संस्कार राजकीय सम्मान से नहीं करने पर एवं सरकार द्वारा किए जा रहे हैं व्यवहार की आलोचना भाजपा नेता कृष्ण कुमार जानू ने की, तो उन्हें पार्टी से निकाल दिया गया। ऐसी हालत में कौन धनखड़ से मिलने का प्रयास करेगा या उनके साथ किए जा रहे व्यवहार के बारे में सवाल करने का साहस करेगा? कुल मिलाकर सरकार द्वारा पूर्व उपराष्ट्रपति धनखड़ के साथ किया गया व्यवहार लोकतंत्र की परंपरा और मर्यादा के अनुकूल नहीं है और इसीलिए इसे काटई शोभनीय नहीं कहा जा सकता।

–अतिथि सम्पादक, राजेन्द्र भागवत (पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)



पंडित अनिल शर्मा

कुम्भ, मंगल-कन्या, बुध-कर्क, गुरु-मिथुन, शुक्र-मिथुन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।
आज सर्वाथ सिद्धि योग दिन 11:52 से सूर्योदय तक है। भद्रा प्रातः 8:41 तक रहेगी। आज सातुड़ी तीज, कजली तीज और अंगारक संकष्ट चतुर्थी व्रत, पंचक है।
श्रेष्ठ चौघड़िया: वर 9:16 से 10:54 तक, लाभ-अमृत 10:54 से 2:10 तक, शुक्र 3:47 से 5:25 तक।
राहुकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:00, सूर्यास्त 7:03

राशिफल

मंगलवार 12 अगस्त, 2025

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, तृतीया तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2082, पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र दिन 11:52 तक, सुकर्मो योग सायं 6:45 तक, विधि करण प्रातः 8:41 तक, चन्द्रमा प्रातः 6:10 से मीन राशि में संचार करेगा।
ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-